IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय संस्कृति का विश्व दर्शन

प्रो० अरूण कुमार (आचार्य)
विक्रान्त शर्मा शोधार्थी,
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
दीन दयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र
सप्त सिन्धु परिसर देहरा

सार– संपूर्ण विश्व में आज भी भारतीय संस्कृति के प्रमाण हर जगह उपलब्ध हैं। विश्व में जितनी भी प्राचीन सभ्यताएं थीं वह स्वतंत्र, अकेली या अलग नहीं थीं। इन सभी संस्कृतियों में एक समान सूत्र था–भारतीय संस्कृति। समय के साथ–साथ ईसाई और मुस्लिम अनुयायियों की असहिष्णु प्रवृति के कारण विश्व की प्राचीन सभ्यताएं और संस्कृतियाँ अपनी पहचान, अस्मिता और उनके चिन्ह खो बैठीं प्राचीन एशिया, यूरोप तथा अन्य देशों में मंदिरों तथा देवमूर्तियों को तोड़ने के प्रमाण भरे पड़े हैं। लेकिन इतने हमलों और तोड़–फोड़ के बावजूद आज भी भारतीय संस्कृति के प्रमाण हर जगह बिखरे पड़े हैं। इसके अलावा ऐसे बहुत से पुरातात्विक प्रमाण हैं जो यह दर्शाते हैं कि भारतीय संस्कृति विश्व के कई देशों में फैली थी। विश्व में कई देशों में आज भी कई मंदिर हैं जहाँ हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियाँ है तथा कई देशों में खुदाई के दौरान हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियाँ मिली हैं।

संकेत शब्द– संस्कृति, असहिष्णु, प्रमाण, विश्व, भारतीय

भूमिका– भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी और पूरे विश्व में फैली हुई संस्कृति थी। विश्व में ऐसे कई देश हैं जहाँ पर आज भी भारतीय रीति–रिवाज हैं, तथा उन्हीं के अनुसार पूजा–पाठ किया जाता है। दक्षिण पूर्वी एशिया के देश इंडोनेशिया, फिलीपाईस, मलेशिया, वियतनाम, लाओंस, कम्बोडिया, थाईलैंड, म्याँमार, श्रीलंका, पाकिस्तान आदि देशों में हिन्दू संस्कृति के अनेकों उदाहरण देखने को मिलते हैं। यहाँ इन देशों में भारतीय संस्कृति के पुरातात्विक प्रमाण तो मिले ही हैं साथ ही साथ यहाँ पर हिन्दू धर्म के कई रीति–रिवाजों का आज भी पालन होता है। दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों के अलावा जो देश जिनमें चीन, तिब्बत, कोरिया, जापान, रूस, मंगोलिया, अफगानिस्तान, ईरान, तुर्कीस्तान, इराक, अरब, इटली आदि आते हैं जिनमें भारतीय संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं।

शोध की विधि– प्रस्तुत शोध–पत्र में ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है जिसमें द्वित्यिक स्त्रोतों से सामग्री एकत्रित करके उनकी व्याख्या की गई है।

शोध के उद्देश्य–

1. विश्व में फैली भारतीय संस्कृति का अध्ययन करना ।
2. विश्व में फैली भारतीय संस्कृति का भारतीय दृष्टिकोण से महत्त्व का वर्णन करना।

विषय– पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति के अनेकों प्रमाण हैं फिर चाहे वह पुरातात्विक प्रमाण हों या धार्मिक रीति–रिवाज हों। इनके बारे में नीचे विस्तृत वर्णन किया गया है।

दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में भारतीय संस्कृति

इंडोनेशिया– इंडोनेशिया ने छः सौ वर्ष पूर्व मुस्मिल धर्म को स्वीकार कर लिया है लेकिन आज भी इस देश ने रामायण को 'महाकाव्य' तथा महर्षि वाल्मीकि को 'आदिकवि' की मान्यता दी है। स्वाधीनता दिवस के अवसर पर राजधानी जकार्ता में आज भी हजारों की संख्या में युवक हनुमान की वेशभूषा में सम्मिलित होते हैं। इस देश में भारतीय शब्दों का प्रयोग महत्त्वपूर्ण जगह किया गया है जैसे राष्ट्रीय विमान सेवा के लिए 'गरुड़ एयरवेज' तथा यातायात के लिए 'जटायु और संपाति' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस देश में यत्र–तत्र ही गणेश, विष्णु, कृष्ण, अर्जुन आदि की प्रतिमाएं कई जगह मिल जाएंगी।

बाली– बाली इंडोनेशिया का द्वीप प्रान्त है। यहां की 90 प्रतिशत जनता हिन्दू धर्म में विश्वास रखती है। इस द्वीप पर भगवान विष्णु की 400 फीट ऊंची प्रतिमा भी है। बाली के प्रमुख मन्दिरों में पुरा वैशाख, तनहा, लोट, उलुवाटु मन्दिर शामिल हैं। बाली एयरपोर्ट से निकलते ही घटोत्कच और कर्ण के बीच युद्ध को दिखाती विशाल मूर्ति लगी है। इसी तरह अलग–अलग चौराहों पर भीम, अर्जुन, भगवान कृष्ण, पांच पाण्डवों और भगवान राम की मूर्तियां दिखाई देती हैं।

फिलीपाईंस– फिलीपाईंस का प्राचीन नाम मनुद्वीप है। इसका वर्णन वायु पुराण और विष्णु पुराण में 'नवद्वीपात्मक भारतवर्ष' में भी किया गया है। इसे नौ द्वीपों में से एक द्वीप माना गया है। मनु महाराज के नाम पर ही इसकी राजधानी का नाम मनीला रखा गया है। आज भी इस देश के सुप्रीम कोर्ट के प्राँगण में मनु महाराज की प्रतिमा है।

मलेशिया – मलेशिया का प्राचीन नाम मलय देश है। इसका वर्णन भी वायु पुराण और विष्णु पुराण में दिया गया है। इस देश में कुछ समय पूर्व तक सुल्तान के सिंहासन के पीछे एक बड़े सिंहासन पर चरण पादुकाएं रखी जाती थीं। इन्हीं चरण पादुकाओं को श्री राम की चरण पादुकाएं मान कर शासन चलाया जाता था। यहाँ पर रामायण बहुत प्रचलित है और यहाँ पर मलय भाषा में राम कथा बोली जाती है जिसे 'सेरीराम' कहते हैं।

वियतनाम– इस देश का पुराना नाम चंपा था। इस देश में अनेक प्राचीन मंदिर और देवी देवताओं की मूर्तियाँ हैं जो कि अनेक अन्वेशकों और पर्यटकों के लिए हमेशा आकर्षण का केन्द्र रहती है।

लाओस– इस देश का प्राचीन नाम लवदेश था। इस देश में भी मंदिर तथा देवी–देवताओं की मूर्तियाँ हैं। यहाँ की भाषा संस्कृत तथा पालि भाषा का मिश्रण है। यहाँ पर राम कथा प्रचलित है जिसे स्थानीय भाषा में 'फलक– लाभ' कहते हैं।

कम्बोडिया– कम्बोडिया का प्राचीन नाम कंबुज है। इस देश का यह नाम भारत के राजर्षि 'कंबु' के नाम पर पड़ा। इस देश में विश्व का सबसे बड़ा मन्दिर अंकोरवाट भी स्थित है। इनका राष्ट्रीय पुष्प कमल है तथा इनके राष्ट्रीय ध्वज पर विष्णु मन्दिर की आकृति है। यहाँ के पाठ्य पुस्तकों में राम–कृष्ण, राम कथा तथा राम कीर्ति सम्मिलित है।

थाईलैंड– इस देश का प्राचीन नाम श्याम देश है। इस देश में दस हजार शिवलिंग वाला बौद्ध मन्दिर है। यहाँ के बौद्ध मंदिरों में राम कथा की मूर्तियाँ आज भी देखने को मिलती हैं।

म्याँमार– म्याँमार का प्राचीन नाम ब्रह्मदेश था जो कि बाद मे वर्मा के नाम से विख्यात हुआ। इस देश में पगान नगर में दो हजार के करीब मंदिर हैं। यहाँ पर राम कथा 'रामायण व रामयागन' के नाम से प्रसिद्ध है।

अन्य देश– दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों के अलावा भी विश्व में कई देश हैं जहाँ भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है और हिन्दु धर्म के अनेकों प्रमाण हैं।

जापान– जापान में शिन्तो धर्म के लोग पूर्ण रूप से हिन्दू धर्म का अनुसरण करने वाले हैं। यहाँ पर देवी–देवताओं की पूजा भी हिन्दू धर्म के अनुसार की जाती है। यहाँ पर शिव, ब्रह्मा, वीणावादिनी (सरस्वती) मैत्रेय (बुद्ध) आदि की प्रतिमाएं भी हैं।

मंगोलिया– मंगोलिया में किशन कान्हा के मन्दिर हैं। इस देश का भारत के प्रति हमेशा भक्तिभाव रहा है। जब आचार्य रघुवीर जी वहां प्रवास पर गए तो उनका बहुत आदर सत्कार किया गया। आचार्य किशन कान्हा के देश से आए हैं इसलिए उनकी चरण वन्दना की गई और उनका भरपूर सम्मान किया गया। (सिंह, 2020)

अफगानिस्तान– खान अब्दुल गफ्फार खान ने अपनी आत्मकथा में यह स्वीकार किया है कि हम विशुद्ध आर्य हैं। मुल्ला (मौलवियों) ने हमारी बुद्धि खराब कर दी थी। इस देश में सर्वत्र बौद्ध, शैव तथा वैष्णव प्रभाव देखने को मिल जाएगा। इसी देश में प्राचीन गान्धार है जहां से महारानी गान्धारी थी। स्ट्रैबो ने भी अपने भूगोल में गान्धार देश का वर्णन किया है। (लाहा, 1972)

ईरान– यह देश अग्निपूजकों का देश है यहां का धर्म ग्रन्थ अवेस्ता वेदों जैसा है। इस देश में आज भी कसती (यज्ञोपवीत) पहनते हैं।

तुर्किस्तान–इस देश से प्राचीन समय में भारत के लिए अश्व भेजे जाते थे। इनका प्राचीन हित्ती धर्म हिन्दू धर्म जैसा ही है। यहां पर सूर्य, प्रकृति, ऋतुदेव (शिव) आदि के उपासक आज भी हैं। इस देश में खुदाई में गणेश, शिव, विष्णु और सूर्य आदि की प्रतिमाएं मिली हैं।

इटली– इटली को राम की संस्कृति का देश कहा जाता है। यहां पर प्राचीन समय से राम कथा गायी और सुनाई जाती है। यहां की प्राचीन लेटिन भाषा पर संस्कृत भाषा का प्रभाव दिखाई देता है यहां पर राम, लक्ष्मण, सीता के भित्ति चित्र व मूर्तियां भी कई जगह पर हैं। (सिंह, 2020)

रूस– रूस का प्राचीन नाम ऋषीय था। रूसी भाषा में संस्कृत के शब्दों की भरमार है और इन्हीं संस्कृत के शब्दों को रशियन भाषा में थोड़ा बहुत परिवर्तन करके प्रयोग किया गया है जैसे रशिया का अर्थ है ऋषीय यानि ऋषियों का प्रदेश, उसी प्रकार रशिया की राजधानी मास्को है जो कि मास्को नदी के किनारे पर है इस शब्द की उत्पत्ति मोक्ष शब्द से हुई है। (ओक, 2017)। रूस में बौद्ध धर्म के अनेकों प्रमाण हैं किरगीजिया क्षेत्र में चू नदी की उपत्यका में भी बौद्ध धर्म के अवशेष मिले हैं। दझूल नगर के पास तो एक पूरा विहार मिला है जिसमे भिक्षुओं के लिए निवास गृह, मन्दिर आदि की व्यवस्था मौजूद थी। तुर्कमानिया के बैराम अबी स्थान की खुदाई में प्राचीन बौद्ध मन्दिर मिला है उसमें एक ऐसा पात्र मिला है जिसमें छोटी–छोटी मूर्तियाँ और सिक्के मिले हैं। (आचार्य, 1990)

अजरबैजान– अजरबैजान एक मुस्लिम देश है। इस देश में माँ दुर्गा का मन्दिर है। इस मन्दिर में अखण्ड ज्योति लगभग 300 सालों से जल रही है। इस मन्दिर को टैम्पल ऑफ फायर के नाम से जाना जाता है इस मन्दिर में सदियों से जल रही अखण्ड ज्योति के कारण ही इसका ऐसा नाम पड़ा है। यह मन्दिर अजरबैजान की राजधानी बाकू के पास सुरखानी शहर में है। पंचभुजा आकार में बना यह मन्दिर देवी मन्दिर के प्रमाण को बताता है। मन्दिर के गुम्बद पर त्रिशूल मौजूद है। ऐसी मान्यता है कि इस मन्दिर का निर्माण प्राचीन काल में व्यापारियों द्वारा करवाया गया था। इतिहासकार बताते हैं कि इस मन्दिर का निर्माण हरियाणा के माजदा गाँव के रहने वाले बुद्धदेव नामक व्यापारी ने करवाया था। मन्दिर के बाहर रखे शिलालेख से पता चलता है कि उत्तमराज और शोभराज नामक व्यापारियों ने भी इसे बनवाने में सहयोग किया था। यहाँ उपस्थित एक शिलालेख पर सम्वत् 1783 का उल्लेख है तथा एक अन्य शिलालेख पर ''श्री गणेशाय नमः'' भी लिखा है। (सिंह, 2021)

विष्णु पुराण में नवद्वीपात्मक भारत वर्ष का वर्णन किया गया है। ये नौ द्वीप आज के समय में नए नामों से जाने जाते हैं। सिंहल द्वीप को आज श्रीलंका के नाम से जाना जाता है। (श्री विष्णु पुराण, 2076) यवद्वीप आज का जावा, सुमात्रा द्वीप और वरणद्वीप आज का वोर्नियों (बाली द्वीप) मलयद्वीप आज का मलेशिया, शूलद्वीप आज का सुलावेसी, मनुद्वीप आज का फिलीपाईन्स, आर्यजय आज का पश्चिमी न्यूगिनी तथा प्राचीन भारतखण्ड अर्थात् वर्तमान भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, बाँग्लादेश, भूटान व बर्मा मिलकर बन जाता है। ये सभी आज अलग–अलग हों लेकिन कभी ये देश न केवल साँस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से अपितु राजनीतिक दृष्टि से भी भारत के अंग थे और इन देशों में आज भी हिन्दू संस्कृति और धर्म के अनेकों प्रमाण मिलते हैं।

निष्कर्ष–

इस शोध पत्र के द्वारा हमने विश्व में फैली भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी संस्कृति है जिसके प्रमाण अलग–अलग देशों में पाए गए हैं। चाहे वह प्रमाण पुरातात्विक हों या इन देशों में होने वाले हिन्दू धर्म का सम्मान हो। वक्त के साथ–साथ कई प्रकार का नुक्सान भारतीय संस्कृति को पहुंचाने का प्रयत्न किया गया फिर चाहे वह मुगलों द्वारा किए गए आक्रमण हों या इसाई धर्म द्वारा हिन्दू धर्म और संस्कृति के प्रति दुष्प्रचार हो। इन सबके बाद भी भारतीय संस्कृति विश्व के अनेक देशों में देखने को मिलती है। आज भी भारतीय संस्कृति के धार्मिक और साँस्कृतिक चिन्ह सम्पूर्ण संसार में बिखरे पड़े हैं। आज भी अनेक देशों में हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियाँ खुदाई में मिली हैं और कई देशों में इनकी पूजा होती है। कई देशों में रामायण और राम कथा को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है तथा वहाँ पर आज भी हिन्दू देवी–देवताओं की पूजा होती है। हमारे लिए विश्व में फैली भारतीय संस्कृति का भारतीय दृष्टिकोण से महत्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है क्योंकि यह बताता है कि हमारी प्राचीन संस्कृति विश्व में कहाँ–कहाँ फैली है। इस इतिहास को जानना हर भारतवासी के लिए भी महत्वपूर्ण है कि प्राचीन समय में भारतीय संस्कृति और हिन्दु धर्म विश्व में कहां–कहां फैला हुआ था। इस शोध पत्र के अध्ययन से हमारी आज की पीढ़ी विश्व में फैली हुई भारतीय संस्कृति के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकती है इससे उन्हें भारतीय संस्कृति की महानता और हिन्दू धर्म की विशालता का भी ज्ञान प्राप्त होता है। आज की पीढ़ी को प्राचीन भारतीय संस्कृति के बारे में अवगत कराना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि यही पीढ़ी इस ज्ञान को आगे लेकर जाएगी और भारतीय संस्कृति के विश्व दर्शन का ज्ञान हमारी आने वाली पीढ़ियों को भी मिलता रहेगा।

सन्दर्भ सूची–

1. सिंह जगराम, (2020) भारत दर्शन, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली (पृ0 355–359)
2. ओक पुरुषोत्तम नागेश , (2017) वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास भाग 3, हिन्दी साहित्य सदन, नई दिल्ली पृ0 24, 27
3. मुनि पराशर, (2076) श्री विष्णु पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर
4. लाहा बिमल चरण, (1972) प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, हिन्दी ग्रंथ अकदमी लखनऊ उत्तर प्रदेश पृ0 7
5. आचार्य पं0 श्री राम शर्मा, (1990) समस्त विश्व को भारत के अजस्त्र अनुदान, युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा पृ0 145
6. सिंह मोना, (2021) Maa jwala Temple in Baku Azarbaijan 30 Nov-2021 https://janjwar.com/vimarsh/maa-jwala-temple-in-baku-azerbaijan-790114 से 9 June 2023 को पुनः प्राप्त